पाठ्य-सामग्री

एम० ए० (हिंदी) प्रथम वर्ष

मध्यकालीन काव्य, (पत्र-2)

‘कबीर की काव्य कला’

प्रो. भूपेंद्र कलसी

समन्वयक

भारतीय भाषा विभाग

नालंदा खुला विश्वविद्यालय, नालंदा

कबीर की काव्य-कला

"कबीर ने कभी काव्य लिखने की प्रतिज्ञा नहीं की तथापि उनकी आध्यात्मिक रस की गगरी से छलके हुए रस से काव्य की कटोरी में कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है।"

-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

कबीर एक युगद्रष्टा थे। उनकी दृष्टि समाज जीवन पर थी। वे समाज-सुधारक थे। इसलिए कबीर के साहित्य में इसी प्रकार के विचार मिलते हैं।

कबीर इस दृष्टि में एक ही सत्ता को मानते थे। वे अद्वैतवादी थे। प्रत्येक शरीर में इसी परम आत्मा के अस्तित्व को देखते थे। इसलिए उन्हें सभी मानव समान थे।

"एक ज्योति से सब उत्पन्ना को ब्राह्मण को सूदा।

कबीर अलग अलग धर्मों को भी नहीं मानते थे।

कहै कबीर एक राम जपहु रे, हिंदू-तुरक न कोई।'

जनता धर्म को सही रूप में न जानकर केवल धर्माडंबर में निरत थी। कबीर ने इसका विरोध किया। कबीर कहते हैं कि इन बालों को क्यों बार बार मुँडते हैं- मन को मुंडिए जिसमें विषय-विकार हैं। मूर्तिपूजा का विरोध किया- पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार। शाक्तों में मांस, मदिरा आदि पंच मकारों का स्थान था। कबीर ने उनकी भी निंदा की। कबीर ने छुआछूत, श्राद्ध, तीर्थस्थान, जप-तप इत्यादि की भी कटु आलोचना की है। सिर्फ हिंदू-समाज की बुराइयाँ उन्होंने देखीं और मुसलमानों को छोड़ दिया, ऐसी बात नहीं। मुस्लिम समाज में रूढ़ सुन्नत, हज्ज-काबा, अजान आदि को लेकर अपने विचार कबीर ने व्यक्त किए हैं। मुल्ला अजान के लिए जो जोर से पुकारता है तो कबीर पूछते हैं कि क्या खुदा बहरा हो गया?

कबीर ने जनता को उपदेश भी दिए, उन्होंने निष्काम भक्ति की बात कही। सहनशील, मृदुवाणी का प्रयोग, परनिंदा और धन पर रोक, सत्संग करने, मित-भाषी बनने के सुझाव उनसे प्राप्त हैं। उन्होंने मन को अपने वश में रखने पर जोर दिया। उन्होंने साधु-संतों को चिताया है तो गृहस्थ को भी समझाया है। इनकी साखियों में धार्मिक, सामाजिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

कबीर के काव्य का उद्देश्य मानव-कल्याण था। इसीलिए इनके काव्य में उदेशात्मकता अधिक है।

कबीर का काव्य आकंठ रस में सराबोर नहीं है। कहीं-कहीं रस-काव्य दृग्गोचर होता है। कुछ पदों और उपदेशात्मक साखियों में शांत रस पाया जाता है। उलटबासियों में अद्‌भुत रस मिलता है। संयोग-वियोग सूचक छंदों में श्रृंगार-रस देखा जा सकता है। इनके काव्य में प्रधान रूप से शांत और श्रृंगार रसों को अधिक स्थान मिला है। अन्य रस नहीं के बराबर हैं।

कबीर-काव्य में अलंकार अवश्य मिलते हैं। लेकिन इसके लिए उन्होंने सायास प्रयत्न नहीं किया है। स्वाभाविक रूप में ही अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कबीर द्वारा प्रयुक्त अलंकारों में रूपक अलंकार का प्रयोग अधिक है। कई जगह उपमा अलंकार भी उपलब्ध हैं। उदाहरण और दृष्टांत अलंकार भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इनके काव्य में अधिकतर अभिधा शब्द-शक्ति का ही प्रयोग हुआ है।

***